13

हर दिन परमेश्वर को महत्व देना (4:13-17)

1987 के पतझड़ ने विश्व की कुछ रोमांचकारी घटनाएं दीं। दो विशेष बातें जो मुझे याद हैं वे हर किसी को याद होनी चाहिए। पहली तो अक्तूबर माह का सोमवार है जब स्कॉट मार्केट पांच सौ अधिक अंक से नीचे गिर गई। सदमे में आए लोग हर जगह अपनी सम्पत्ति और टूटे सपनों के लिए अफ़सोस कर रहे थे। घबराए हुए स्टॉक ब्रोकरों ने देखा कि उनका आर्थिक मैदान नीचे गिर रहा है। कई हफ़्ते तक मीडिया ने यह समझाने की कोशिश के प्रयासों पर ध्यान बनाए रखा कि यह गिरावट क्यों आई। दूसरी बड़ी घटना रोनाल्ड रीगन और मिखाइल गोर्बाचेव के बीच ''शिखर वार्ता'' थी। इस मीटिंग के दौरान परमाणु हथियारों का समझौता हुआ या होने वाला था, जो शांति के मार्ग का मील पत्थर था। बेशक रूसी और अमेरिकी दोनों सरकारों द्वारा उस समझौते को मंजूर कर लिया गया पर अभी भी इसमें कुछ बातें खटकती थीं। पहली यह कि गत तीस वर्षों में जब भी, महाशक्तियों ने किसी समझौते पर हस्ताक्षर किए, तो यह हथियारों पर खर्च करने में तेजी करने के आरम्भ का संकेत ही था। इस समझौते के अर्थ को समझाने के लिए कहा जा सकता है कि यदि दोनों पक्षों की सेना केवल एक सौ आदमियों तक रह जाए, तो उनमें से प्रत्येक के पास समझौते के अनुसार मिसाइलों का विनाश करने के बाद भी, संसार को तीन या चार बार नष्ट करने के लिए काफ़ी परमाणु हथियार होंगे।

यह पाठ परमाणु हथियारों या अर्थशास्त्र पर सबक देने के लिए नहीं है परन्तु ये घटनाएं कुछ तथ्यों की ओर संकेत अवश्य करती हैं। पहला भौतिक सम्पत्ति आज है कल नहीं। दूसरा आवारा भौतिक अस्तित्व बारूद की छाया में है और संसार की राजनीति को देखें तो यह दागदार है। स्पष्टतया इन दोनों को ध्यान में रखते हुए हम सीख सकते हैं कि जीवन और जीवन की बातें वे नहीं है, जिन पर हम अपना भरोसा रख सकें। इस सच्चाई को हम जीवन के बड़े तराजू पर देख सकते हैं, पर हमारे निजी जीवनों के लिए इसका अर्थ क्या है ? यदि आपसे पूछा जाए, ''भविष्य के लिए आपके सपने क्या हैं ?'' तो आप क्या उत्तर देंगे ? पढ़ाई ? विवाह ? परिवार ? अलग-अलग जगह घूमना ? नई कार ? सम्पत्ति ? इन सभी सपनों में परमेश्वर और आत्मिक विचार कहां फिट बैठते हैं ? भविष्य के प्रति बहुत से लोगों का केवल एक ही विचार भौतिक भरपूरी होता है ! हम सांसारिक सोच वाले हैं और भविष्य की अपनी योजना में से परमेश्वर को निकाल देते हैं।

अध्याय 4 के अन्त में ''याकूब परमेश्वर की इच्छा'' पर चर्चा करता है। इस अध्याय में पहले ही उसने कलीसिया की समस्याओं और एक दूसरे की बदनामी की बात की है। अब याकूब उन विषयों को ''परमेश्वर की इच्छा'' पर चर्चा के विषयों में ढाल देता है। स्पष्टतया परमेश्वर की इच्छा के बाहर विश्वासी परेशानी पैदा करने वाला बन जाता है। यह सच्चाई बाइबली इतिहास के उदाहरणों से पता चलती है: लूत सदोम को चला गया और अपने परिवार को लगभग बर्बाद

भी कर दिया, दाऊद के व्यभिचार के कारण उसके परिवार और राज्य में परेशानियां आईं। और परमेश्वर से योना के भागने के कारण जहाज़ और इसके मलाह नष्ट ही होने वाले थे। हर मामले में परमेश्वर की इच्छा के प्रति एक गलत व्यवहार दिखाया गया।

पवित्र आत्मा अब हमारे अक्खड़पन और आत्मनिर्भर होने को डांटने के लिए याकूब की अगुआई करता है। वह हमें दिखाना चाहता है कि जीवन स्वयं इस बात की मांग करता है कि हम परमेश्वर को ध्यान में रखें। वह हमें इस बात तक ले जाता है कि हम अपने प्रतिदिन के जीवनों में से परमेश्वर को निकाल नहीं सकते और यह कि हमें उसकी इच्छा का ध्यान रखना आवश्यक है।

परमेश्वर की इच्छा को नज़रअन्दाज़ करना बेकार है (4:13-16)

हमें यह समझाने के लिए कि अपने प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर की इच्छा को नज़रअन्दाज़ करना कितनी बड़ी मूर्खता है, याकूब चार कारण बताता है कि परमेश्वर की बात सुनना क्यों आवश्यक है। पहले तो हमें परमेश्वर की इच्छा पर *अपने जीवनी की जटिलता के कारण पर* ध्यान देना आवश्यक है। आयत 13 में जब वह कहता है, ''तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और ब्योपार करके लाभ उठाएंगे,'' वह कह रहा है, ''रुको और केवल अपनी बात पर ध्यान दो।'' आइए अपने जीवनों पर विचार करें, जिसमें हम खरीद रहे हैं, बेच रहे हैं, लाभ कमा रहे हैं, बो रहे हैं, यहां जा रहे हैं, वहां जा रहे हैं। हर दिन हम कितने जटिल निर्णय लेते हैं? याकूब के द्वारा परमेश्वर जीवन के कामकाज को गलत नहीं ठहरा रहा है, पर वह कह रहा है कि बिना उससे सलाह लिए यह कितना बेतुका है। जीवन का अर्थ परमेश्वर के साथ ही होता है और बिना उसके इसका कोई अर्थ नहीं है।

दूसरा, याकूब कहता है कि जीवन जटिल ही नहीं, अनिश्चित भी है। वह कहता है, ''और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा'' (4:14)। पवित्र शास्त्र हमें बताना चाहता है कि जीवन अनिश्चित है, उदाहरण के लिए (नीतिवचन 27:1)। यीशु ने इस बात को एक कहानी के साथ समझाया (लूका 12:16-21)। यहां तक कि जीवन के अपने विकृत विचार से संसार इस मूल बात को समझ गया। रोमी दार्शनिक सीनिका को यह कहने के लिए प्रतिष्ठा मिली है, ''किसी मनुष्य के लिए अपने जीवन की योजनाएं बनाना कितनी बेवकूफ़ी है, जबकि आने वाला कल भी उसके हाथ में नहीं है।'' जीवन की परिस्थितियां, वे लोग जिन्हें हम जानते हैं और जान गए हैं, और हर दिन जिन घटनाओं को हम देखते हैं वे सब इसी सच्चाई की वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाते हैं। याकूब यह नहीं कह रहा है कि हम पीछे बैठ जाएं और कुछ न करें क्योंकि हमारा भविष्य अनिश्चित है। वह कहता है हम अपनी योजनाओं और अपने भविष्य को परमेश्वर के हाथों में दे दें। केवल जब हम अपने-अपने भविष्य को परमेश्वर को सौंपते हैं तभी हमें अपने भविष्य की कोई निश्चितता मिलती है।

फिर याकूब विस्तार से बताता है कि जीवन अनिश्चित है क्योंकि *यह थोड़ी देर का है*। आयत 14 के अन्तिम भाग में जब वह कहता है, ''... तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर अलोप हो जाती है।'' वह अय्यूब के लेखों से एक रूपक उधार लेता है (अय्यूब 7:9)। मुझे यकीन है कि कई बार, विशेषकर तकलीफ़ के समय में, अय्यूब के लिए दिन इतने लम्बे हो जाते होंगे कि वे खत्म होने का नाम ही नहीं लेते थे। अपनी पीड़ा में वह इस

बात से परिचित था कि जीवन कितना छोटा हो सकता है (अय्यूब 7:6; 8:9; 9:25; 14:1, 2)। समय के हमारे सीमित ढंग में, जीवन इतना लम्बा लग सकता है, इतना लम्बा कि हम परमेश्वर के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को भूल जाएं। मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूं कि हम उदास होकर बैठ जाएं, बल्कि हमें अपने जीवनों की सच्चाई को समझना आवश्यक है। अपने जीवनों को बर्बाद करने के बजाय हमें उन बातों में अपने जीवनों का *निवेश* करना चाहिए जो अनादि काल तक रहने वाली हैं। परमेश्वर की इच्छा को मानने वाले बनकर हम अपने जीवन का निवेश करते हैं।

चौथा, आयत 16 में याकूब दिखाता है कि मनुष्य अपनी कमज़ोरी को छिपाने की कोशिश कैसे करता है। वह कहता है, ''पर अब तुम अपनी डींग पर घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड बुरा होता है ... (4:14)।'' हम अपनी कमज़ोरियों और असुरक्षाओं को छिपाने की शेखी मारते हैं। हम भविष्य के लिए क्या कर सकते हैं? हम में इसके अन्दर झांकने की शक्ति या इसे नियन्त्रण में रखने की बुद्धि नहीं है। तौभी हम ऐसे इठलाते और मज़ाक करते हैं जैसे पूरा नियन्त्रण हमारे हाथ में हो। हमारे शेखी मारने में दिक्कत यह है कि हम अपने आपको परमेश्वर की स्थिति में रख लेते हैं। ऐसा हम यह कहते हुए करते हैं कि भविष्य में हम यह या वह करेंगे, और परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में नहीं रखते। याकूब बड़े स्पष्ट और सरल अर्थ में कहता है कि *ऐसा घमण्ड करना पापपूर्ण है*!

किसी को लगेगा कि सदियों से मनुष्य ने जो सबक सीखे हैं कि उनसे पता चल जाएगा कि परमेश्वर की इच्छा को नज़रअन्दाज़ करना कितनी मूर्खता है। यह तो बिना गाइड के घने जंगल में जाना या कपास के बिना तूफ़ानी समुद्र के ऊपर से उड़ने की तरह है। संक्षिप्त वाक्य में याकूब हमें बताता है कि जीवन के प्रति हमारा व्यवहार क्या होना चाहिए: ''इसके विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, कि यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे'' (4:15)। याकूब यह वाक्य कर्मकांडी, सरल फार्मूले के रूप में नहीं दे रहा जिसे हम बिना सोचे दोहराते रहें। वह कहता है कि यह मन का व्यवहार होना चाहिए, चाहे व्यक्त किया जाए या इसका संकेत हो, जिससे हमारे जीवनों की योजना और क्रम में परमेश्वर को उसका सही स्थान मिले।

परमेश्वर की इच्छा को नज़रअन्दाज़ करना पापपूर्ण है (4:17)

याकूब 4:17 पिटाई करने वाली छड़ी बन चुकी है, जिसका इस्तेमाल लगभग हर प्रचारक करता है। जब याकूब ने कहा, ''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है,'' तो उसने प्रचारक को एक ऐसी आयत दे दी जिसे वह किसी भी विषय पर भाइयों को पीट सके। किसी समय पर वक्ता जिस भी बात के लिए बढ़ावा देने की बात कर रहा हो यह उसी के लिए विशेष रूप से सही प्रतीत होती है, जैसे आराधना में भाग लेना, आत्माओं को जीतना, आदि। आयत का इस्तेमाल इस प्रकार करना तर्कसंगत हो सकता है बल्कि सही भी हो सकता है, परन्तु मुझे यकीन है कि याकूब ने ऐसा नहीं चाहा था।

आयत 17 को उस ताड़ना के संक्षेप के रूप में लिया जाना चाहिए जो आयत 13 से 16 आयतों में बताई गई है। याकूब उन भाइयों को लिख रहा है, जिन्होंने अपनी विचारहीनता के द्वारा गलती की है यानी उन्होंने अपने प्रतिदिन के जीवनों में से परमेश्वर को निकाल दिया है। जो कुछ वे कर रहे हैं वह गलत नहीं है, परन्तु परमेश्वर और उसकी इच्छा पर ध्यान न देना उनकी

लापरवाही है। हमारे लिए उसी फंदे में गिरना कोई बड़ी बात नहीं है। जीवन में जल्दबाज़ी और तनाव रहता है। विजय पाने और सफ़ल होने के लिए हम योजनाएं बनाने लगते हैं कि हम क्या करेंगे, और हमारा ध्यान आम तौर पर परमेश्वर पर भरोसा रखने से हटकर अपने ऊपर केन्द्रित हो जाता है। याकूब ने उन्हें उनकी लापरवाही दिखाई और संकेत रूप में हमारी भी। वह ज़ोर देता है कि हम सब को अपने तरीकों में नुक्स देखना चाहिए। हो सकता है कि इस आयत का फिलिप का अनुवाद दूसरे सब अनुवादों से बेहतर ढंग से समझा सकता हो। उसका अनुवाद इस प्रकार है: ''कोई संदेह नहीं कि तुम थ्योरी से बढ़कर सहमत होते हो। याद रखो कि यदि किसी को पता है कि क्या सही है और वह इसे कर नहीं पाता, तो उसकी नाकामी वास्तविक पाप है।''

सारांश

जीवन परमेश्वर की ओर से मिला एक दान है और इसका इस्तेमाल उसकी महिमा के लिए किया जाना चाहिए। सुलैमान ने इस बात को और पक्का कर दिया जब उसने कहा, ''सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है'' (सभोपदेशक 12:13)। बिना परमेश्वर की सहायता के हम भविष्य की योजना बनाने की गलती करने का जोखिम नहीं ले सकते।